1. किशोरावस्था में विकास
I : शारीरिक, गत्यात्मक एवं यौन विकास

परिचय

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा Adolescence शब्द का हिन्दी पर्याय है। Adolescence शब्द का उद्‌भव लेटिन भाषा से माना गया है जिसका सामान्य अर्थ है बढ़ना या विकसित होना। बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक के महत्वपूर्ण परितर्वनों जैसे शारीरिक, मानसिक एवं अल्पबौद्धिक परिवर्तन की अवस्था किशोरावस्था है। वस्तुत: किशोरावस्था यौवानारम्भ से परिपक्वता तक वृद्धि एवं विकास का काल है। 10 वर्ष की आयु से 19 वर्ष तक की आयु के इस काल में शारीरिक तथा भावनात्मक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इसे 13 से 18वर्ष के बीच की अवधि मानते हैं, जबकि कुछ की यह धारणा हैं कि यह अवस्था 24 वर्ष तक रहती है।

एल. कारमाइकेल (1968) के अनुसार, ''किशोरावस्था जीवन का वह समय है, जहाँ से एक अपरिपक्व व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास एक चरम सीमा की ओर अग्रसर होता है। दैहिक दृष्टि से एक व्यक्ति तब किशोर बनता है जब उसमें वय: संधि प्रारम्भ होती है और उसमें संतान उत्पन्न करने की योग्यता प्रारम्भ हो जाती है। वास्तविक आयु की दृष्टि से बालिकाओं में वय: संधि (यौवनारम्भ) अवस्था 12 वर्ष की आयु से 15 वर्ष की आयु के मध्य प्रारम्भ होती है। इस आयु अवधि में 2 वर्ष की आयु किसी ओर घट-बढ़ सकती है। बालकों के लिये वय: संधि का प्रारम्भ इसी आयु में प्रारम्भ होता है, बहुधा वह बालिकाओं की अपेक्षा 1 या 2 वर्ष देर से प्रारम्भ होता है।''

कारमाइकेल की उपर्युक्त परिभाषा बड़ी व्यापक रूप में है। जर्सील्ड (1978) की परिभाषा में भी यह स्पष्ट है कि किशोरावस्था वय: संधि के बाद की अवस्था है। जर्सील्ड के अनुसार, ''किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें एक विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था की ओर बढ़ता है।''

लेकिन किशोरावस्था को निश्चित अवधि की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यह अवधि तीव्र गति से होने वाले शारीरिक परिवर्तनों विशेषतया यौन विकास से प्रारंभ होकर प्रजनन परिपक्वता तक की अवधि है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह गौण यौन लक्षणों (यौवानारम्भ) के प्रकट होने से लेकर यौन एवं प्रजनन परिपक्वता की ओर अग्रसर होने का समय है जब व्यक्ति मानसिक रूप से प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होता और वह सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से उपेक्षाकृत आत्म-निर्भर हो जाता है जिससे समाज में अपनी एक अलग पहचान बनती है।

किशोरावस्था में विकास शारीरिक, गत्यात्मक एवं यौन विकास

किशोरावस्था में केवल शारीरिक परिपक्वता ही नहीं वरन् समस्त प्रकार की परिपक्वता पाई जाती है। पहले लोग यौवनारम्भ एवं किशोरावस्था में अन्तर नहीं मानते थे, क्योंकि शारीरिक विकास पूरा हो जाने तथा संतान पैदा करने योग्य हो जाने पर उन्हें प्रौढ़ मान लिया जाता था। किशोरावस्था के महत्त्व को स्वीकार किया गया तो यह देखा गया कि किशोरावस्था में शारीरिक परिपक्वता के साथ-साथ मानसिक, सामाजिक और सांवेगिक परिपक्वता भी पाई जाती है। इसलिये आधुनिक युग में आज किशोरावस्था के अन्तर्गत परिपक्वता का अध्ययन किया जाता है। किशोर तथा किशोरियों के भीतर यौन सम्बन्धी विशेषताएँ और उनसे संबंधित मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक परिवर्तन इस अवस्था के मुख्य लक्षण माने जाते हैं लेकिन व्यक्तिगत भिन्नताओं के कारण कुछ बालकों में ये लक्षण एकाध वर्ष पहले और कुछ के भीतर कुछ समय बाद अभिव्यक्त होते हैं। किशोरों में पाई जाने वाली समायोजन क्षमताओं, सामाजिक सम्बन्धों का स्वरूप पूर्व किशोर और उत्तर किशोर में एक-सा नहीं होता इसलिये किशोरावस्था को सुविधा की दृष्टि से निम्न दो उप-अवस्थाओं में बाँट दिया गया है-

(1) **पूर्व-किशोरावस्था**—यह अवस्था 13-14 वर्ष से लेकर 16या 17 वर्ष की होती है।

लड़कियों में यह अवस्था 13 वर्ष की आयु से 16वर्ष होती है तथा लड़कों में लगभग एक वर्ष बाद प्रारम्भ होती है।

(2) **उत्तर-किशोरावस्था**—लड़कियों की 16या 17 वर्ष से 20-21 वर्ष तक की अवस्था है व लड़कों की 18वर्ष से 21 वर्ष तक है। पूर्व और उत्तर-किशोरावस्था की विभाजक रेखा सत्रहवें वर्ष के आस-पास मानी जाती है। जबकि सामान्य लड़का या लड़की ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षा में होते हैं। माता-पिता उसे प्राय: वयस्क समझने लगते हैं और वह प्रौढ़ों के कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए या

कॉलेज या किसी व्यवहारिक प्रशिक्षण में जाने के लिये तैयार समझा जाता है।

इसी तरह स्कूल में भी बालकों की स्थिति ऐसी हो जाती है कि वह नई जिम्मेदारी का अनुभव करने लगते हैं जो उसने पहले कभी नहीं ली थी। इससे बालक को अधिक परिपक्व तरीके से व्यवहार करने का प्रोत्साहन मिलता है। लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में परिपक्वता देर से आती है।

कुछ बाल मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था की व्याख्या पूर्व-किशोरावस्था, प्रारम्भिक किशोरावस्था व उत्तर-किशोरावस्था में विभाजित करके की है। पूर्व-किशोरावस्था लड़कों की 11 वर्ष से 12-13 वर्ष जबकि लड़कियों की 10-11 वर्ष, इसी प्रकार प्रारम्भिक किशोरावस्था लड़कों की 13-17 वर्ष व लड़कियों की 12-16वर्ष व तीसरी अवस्था उत्तर-किशोरावस्था लड़कों की 18-21 वर्ष व लड़कियों की 17-20 या 21 वर्ष होती है।

इस वर्गीकरण से पता चलता है कि लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा परिपक्वता जल्दी आती है व पूर्व-किशोरावस्था के बाद तुरन्त एक वर्ष ही पूर्व-किशोरावस्था आगमन होती है। इस तरह लड़के अपनी आयु के लिहाज से लड़कियों की अपेक्षा अधिक अपरिपक्व लगते हैं। फिर भी जब लड़कियों के साथ-साथ उन्हें भी घर और स्कूल में अधिक परिपक्व स्थिति प्राप्त हो जाती है, तब वे प्रायः जल्दी ही व्यवस्थित हो जाते हैं और लड़कियों की तरह ही व्यवहार की परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं। इसलिये किशोरावस्था के पूर्व और उत्तर भागों के बीच विभाजक रेखा के रूप में व्यवहार में इसी परिवर्तन को लिया जाता है जो कि 12 वीं कक्षा के अन्तिम वर्ष में लाक्षणिक होता है। इस प्रकार पूर्व-किशोरावस्था तेरह से सोलह या सत्रह तक रहती है, अर्थात् आठवीं कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा के अन्त अथवा बारहवीं के प्रारम्भ में।

अब हम देखेंगे कि किस तरह बाल्यावस्था से पूर्व व उत्तर-किशोरावस्था में बालक प्रवेष करते हुए कैसे-कैसे विकास करता है।

विकास का प्रक्रम

किशोरावस्था का अपना एक निश्चित अनुक्रम पाया जाता है। किशोरावस्था के प्रक्रम को समझने के लिये यौवनारम्भ से प्रारम्भ करना होगा। यौवनारम्भ अथवा संधि जिसमें अलिंगता समाप्त होकर लिंगता आ जाती है। यह अवस्था बाल्यावस्था की समाप्ति से कुछ पहले शुरू हो जाती है व किशोरावस्था के कुछ बाद तक चलती है। यौवनारम्भ को कभी-कभी किशोरावस्था भी कहते हैं और उसके उत्तर भाग को पूर्व-किशोरावस्था, क्योंकि जिस समय बालक लैंगिक परिपक्वता प्राप्त करता है उसको बाल्यावस्था और किशोरावस्था की विभाजक रेखा माना जाता है और विकास इस अवस्था को जब तक वह प्राप्ति नहीं होता तब तक वह बालक माना जाता है। इसका उल्लेख प्रारम्भ में किया गया है।

उत्तर-किशोरावस्था की तुलना में पूर्व और प्रारम्भिक किशोरावस्था में अत्यधिक परिवर्तन पाये जाते हैं। उनमें शारीरिक परिवर्तन तेजी से पाये जाते हैं लेकिन उत्तर किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तन अदृश्य होते हैं। पूर्व-किशोरावस्था जीवन की वह अवधि है जिसे प्रायः 'तूफान और तनाव की आयु' कहा जाता है। इस आयु में किशोरों का माता-पिता, शिक्षकों, दोस्तों के साथ अनेक बार संघर्ष हो जाता है। उसकी संवेगात्मकता बाल्यावस्था की अपेक्षा बढ़ जाती है तथा उसके साथ रहना या काम करना मुश्किल होता है। पूर्व समायोजित बालक को कई विकासात्मक कार्यों की जिम्मेदारी लेनी होती है, जैस-व्यवसाय के लिये अपने को अलग रखना, आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना, विवाह व पारिवारिक जीवन के लिये तैयार करना, बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करना, सामाजिक ढंग से उत्तरदायित्व की इच्छा करना, समाज के नियमों को अर्जित करना आदि।

हेविगहर्स्ट (1953) के अनुसार किशोर का यह विश्वास कि प्रौढ़ों का उसके बारे में अच्छा विचार नहीं है, उसका प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करना कठिन कर देता है। वह माता-पिता से कई बार उलझ जाता है। इस प्रकार वह अपने और माता-पिता के बीच एक दीवार खड़ी कर देता है। जिससे वह माता-पिता से खुलकर बात नहीं करता और उनकी मदद नहीं ले सकता। हेस व गोल्डबलेट (1957) के अनुसार, ''वृद्धावस्था को छोड़कर व्यक्ति के विकास की संभवतः कोई भी अन्य अवस्था ऐसी नहीं है जिसमें नकारात्मक गुणों का होना और नियमबद्ध आचरण का अभाव इतना अधिक स्पष्ट हो।''

किशोरावस्था को संक्रमण काल कहा जाता है। किशोरावस्था बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था का संक्रमण काल है। समस्त संक्रमण के समान ही किशोरावस्था में भी नई एवं पुरानी अभिवृत्तियों में परिवर्तन पाया जाता है। इसलिये व्यवहार में असंगति व अस्थिरता पाई जाती है।

किशोरावस्था की विशेषताएँ

उपरोक्त विवेचन के आधार पर किशोरावस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) किशोरावस्था शैशवावस्था के लक्षणों की पुनरावृत्ति है:- किशोरावस्था की मानसिक विशेषताओं का विश्लेषण करने पर यह पाया गया है कि इस अवस्था के कई लक्षण शैशवास्था के लक्षणों से मिलते-जुलते हैं। इसलिये इसे बाल्यावस्था के लक्षणों की पुनरावृत्ति कहा गया है। किशोर बाल्यावस्था की तरह चंचल होते हैं। उनमें बालकों की तरह संवेगशीलता भी अधिक होती है। जैसे किशोरावस्था के संवेग बहुत कुछ वहीं है जो बाल्यावस्था के प्रकार और अभिव्यक्ति के रूप में होते हैं।

(2) किशोरावस्था सांवेगिक अस्थिरता की अवस्था है:- किशोरावस्था में बालक के व्यवहार में पाई जाने वाली अस्थिरता

अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है। इसलिये इसे 'तूफान व तनाव' की आयु भी कहा जाता है। इस अवस्था में शरीर और ग्रंथियों के परिवर्तनों के कारण संवेगात्मक तनाव बहुत बढ़ जाता है।

गेसेल, (1956) के अनुसार इस आयु में वह अपने संवेगों पर नियन्त्रण करने की प्रबल इच्छा निश्चित रूप से रखता है। इस प्रकार ज्यों-ज्यों पूर्व-किशोरावस्था समाप्ति की ओर बढ़ती है त्यों-त्यों परम्परागत तूफान और तनाव के प्रमाण कम होते जाते हैं। इस प्रकार किशोरों के संवेग प्रायः तीव्र, अनियंत्रित, अभिव्यक्ति वाले और विवेक शून्य तो होते हैं लेकिन उनके संवेगात्मक व्यवहार में प्रायः प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर सुधार होता जाता है।

इस अवस्था में संवेगों की अस्थिरता उनके व्यवहार, सामाजिक संबन्धों आदि में अधिक पाई जाती है। इसी अस्थिरता के कारण वह अपने भविष्य के बारे में योजनाएँ नहीं बना पाते है। इसी प्रकार उनकी पसंद में भी अस्थिरता पाई जाती है। इसका कारण किशोरों में छुपी असुरक्षा की भावना है।

(3) किशोरावस्था परिवर्तन की अवस्था है ई. हरलॉक (1964):-के अनुसार किशोरावस्था के परिवर्तनों का ज्ञान धीरे-धीरे किशोर को होता जाता है और इस ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ वह वयस्क व्यक्तियों की भाँति व्यवहार करना शुरू कर देता है, क्योंकि वह वयस्क दिखाई देता है। एम. मरेश (1955) के अनुसार किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक अर्थात् सम्पूर्ण विकास तेजी से होते हैं। इसमें बाल्यावस्था का शरीर, जीवन के प्रति बाल सुलभ दृष्टिकोण और बाल्यकाल का व्यवहार पीछे छूट जाते हैं और उनकी जगह परिपक्व शरीर, व बलवती हुई अभिवृत्तियाँ ले लेते है। किशोरावस्था में बाल्यावस्था की रूचियाँ, आदतें धीरे-धीरे समाप्त होती जाती हैं वे इस अवस्था में अपनी जिम्मेदारी समझने की कोशिश करते हैं। किशोरावस्था में ये परिवर्तन बहुत तीव्र गति से होते हैं। इसलिये इनमें समायोजन करना मुश्किल हो जाता है लेकिन धीरे-धीरे समायोजन में सफलता मिलती जाती हैं।

(4) किशोरावस्था समस्या बाहुल्य की अवस्था है:-प्रत्येक आयु की अपनी समस्याएँ होती हैं लेकिन किशोरावस्था की समस्याएँ अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा बहुत होती हैं और अधिक कठिन लगती हैं। बाल्यावस्था में माता-पिता और शिक्षक उसकी समस्याएँ सुलझाने में मदद करते थे। लेकिन किशोर बालक स्वयं अपने माता-पिता, शिक्षकों तथा समाज के अन्य व्यक्तियों के सामने एक समस्या होता है।

किशोरों की समस्याओं के अध्ययनों से पता चलता है कि उनकी संख्या बहुत होती है और वे अधिकांशतः इन बातों के बारे में होती हैं; जैसे-आकृति और स्वास्थ्य, घर के अंदर और बाहर वालों के साथ सामाजिक सम्बन्ध, विषमलिंगीय सम्बन्ध, भविष्य की योजनाएँ, शिक्षा, व्यवसाय का चुनाव, जीवनसाथी का चुनाव, काम सम्बन्धी, रूपया पैसा आदि। इसलिए इस अवस्था को समस्या आयु कहा गया है।

किशोरावस्था एक संक्रमण की अवस्था है, जिसमें बालक न बालक रहता है और न प्रौढ़। डी.पी. आसुबेल ने सही कहा है, ''हमारी संस्कृति में किशोरावस्था को व्यक्ति की जैव-सामाजिक स्थिति का एक संक्रमणकाल कहा जा सकता है। इस अवस्था में कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, विशेषाधिकारों और अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों में बहुत परिवर्तन हो जाते हैं। ऐसी स्थितियों में अपने माता-पिता, साथियों और दूसरों के प्रति अभिवृत्तियों का बदल जाना अनिवार्य हो जाता है।

किशोर प्रायः बाल्यावस्था का ही व्यवहार करता है तब उसे डाँटा जाता है कि अपनी अवस्था अथवा आयु के अनुसार व्यवहार करे और जब वह प्रौढ़ की तरह व्यवहार व कार्य करता है तब प्रायः 'बड़े' बनने का आरोप लगाया जाता है। यह कहकर कि अभी बच्चे हो। इस तरह बालक असमंजस की स्थिति में पड़ जाता है।

–

फ्रायड के अनुसार किशोर बालक की विजातीय कामुकता में उनकी शैशवाकालीन कामुकता बड़ी स्पष्ट झलक मिलती है। किशोरावस्था में काम शक्ति का विकास पाया जाता है। शुरू की लैंगिक रूचियाँ अधिकतर शारीरिक अंतरों पर केन्द्रित होती हैं। लैंगिक क्षमताओं के विकास के साथ किशोर की विषमलिंगीयों के प्रति रू

वर्ष की प्रारंभ होकर 17-18वर्ष तक बनी रहती है तो लकों में किशोरावस्था 13-14 वर्ष से प्रारंभ होकर 21 तक बनी रहती है। शैशवावस्था के बाद शारीरिक वृद्धि की तीव्रता केवल किशोरावस्था में ही देखने को मिलती है। सम्पूर्ण शारीरिक वृद्धि का एक तिहाई वृद्धि किशोरावस्था में ही पूर्ण होती है। केवल शारीरिक वृद्धि ही नहीं बल्कि अन्य परिवर्तन जैसे सामाजिक, मानसिक एवं भावात्मक परिवर्तन भी किशोरावस्था में बहुत तीव्र गति से होते हैं।

किशोरावस्था में लड़कों तथा लड़कियों की आवाज में भी परिवर्तन होता है। लड़की की आवाज में कर्कशता और भारीपन आ जाता है। लड़कियों की आवाज कोमल एवं सुरीली हो जाती है। लड़कियों का शारीरिक विकास इस ढ़ँग से होने लगता है कि वे अपने शरीर के प्रति चेतन रहने लगती हैं।

इस अवस्था में हड्डियों का लचीलापन समाप्त होने लगता है और उनमें दृढ़ता एवं परिपक्वता आ जाती है, वे गोल हो जाती हैं। लड़कियों के कूल्हे की हड्डियों के पास चर्बी एकत्र होने लगती है और उनमें भारीपन आने लगता है, चेहरे की रचना में भी स्थिरता आने लगती है। चेहरे पर मुहासे भी निकलने लगते है। किशोरावस्था में सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन शरीर के विभिन्न अंगों पर बाल उगना है।

10,500 लड़कियों का अध्ययन करके पहले मासिक धर्म की औसत आयु 15 वर्ष बताई है। वास्तविकता यह है कि मासिक धर्म के शीघ्र तथा देर से आरम्भ होने पर देश की जलवायु, परिवार की आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति तथा संवेगात्मक स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक परिवर्तन तथा उनका मनोवैज्ञानिक महत्त्वः–पूर्व-किशोरावस्था में शारीरिक वृद्धि धीमी पड़ जाती है लेकिन उसे आसानी से नहीं देखा या पहचाना जा सकता, जितनी आसानी से लम्बाई और भार की वृद्धि को या गौण लैंगिक लक्षणों के विकास को देखा जा सकता है।

जे. पी. मैकी व डी.एच. इकोरन (1955) के अनुसार, आन्तरिक वृद्धि पूर्व-किशोरावस्था में बहुत होती है और लम्बाई और भार की वृद्धि के साथ उसका निकट सह-सम्बन्ध होता है। किशोरावस्था में तीव्र गति से होने वाले शारीरिक और यौन परिपक्वता का बालक के मानसिक जीवन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। शारीरिक परिपक्वता लड़कियों में 14 वर्ष तथा लड़कों में 16वर्ष की अवस्था में पाई जाती है।

पूर्व-किशोरावस्था के अन्त तक बालकों की ज्ञानेन्द्रियाँ लगभग परिपक्व हो जाती है, इनकी गौण यौन-विशेषताएँ भी लगभग परिपक्व हो जाती हैं जिसमें संतानोत्पादन सम्भव होता है। पूर्व-किशोरावस्था के अन्त तक लड़के व लड़कियाँ आकार और सामान्य आकृति में पुरुषों और स्त्रियों की तरह लगते हैं और बालक-बालिकाओं की तरह कम।

पूर्व-किशोरावस्था के गोनेडों ग्रंथि की सक्रियता में वृद्धि हो जाने के कारण सम्पूर्ण अन्तःस्त्रावी तंत्र में एक अस्थायी असन्तुलन आ जाता है। जो ग्रंथियाँ बाल्यावस्था में महत्त्वपूर्ण थीं उनकी अन्तःस्रावी तंत्र में अब प्रधानता कम हो जाती हैं, जो पहले गौण थीं वे अब प्रधान बन जाती हैं। लड़कियों में थायराइड ग्रंथियाँ प्रथम रक्तःस्त्राव के समय बढ़ जाती हैं जिसमें उनकी न्यूनतम उपचार की दर में अनियमितताएँ आ जाती हैं। इस समय लिंग ग्रंथियाँ तेजी से विकसित होती हैं और सक्रिय हो जाती है, लेकिन ये परिपक्व आकार उत्तर-किशोरावस्था तक ही प्राप्त करती हैं। बालकों में होने वाले यौन सम्बन्धों गौण परिवर्तन मुख्य रूप से मूँछ, दाढ़ी, हाथ, पैर, बगल तथा शरीर के गुप्त अंगों में बालों का उगना, कंधों का चौड़ा होना, वाणी परिवर्तन तथा मुख मण्डल के परिवर्तन हैं। इस प्रकार लड़कियों में वाणी परिवर्तन, शरीर का चौड़ा तथा गोलाई लेना, वक्षस्थल का विकास, मुखमण्डली परिवर्तन, यौन सम्बन्धी गौण परिवर्तन कहलाते हैं।

आन्तरिक परिवर्तनों में पाचन तंत्र के अंगों के आकार में परिवर्तन हो जाता है। बाल्यावस्था की अपेक्षा

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से शारीरिक विकास अथवा परिवर्तनों की स्पष्ट झलक मिलती है। इसके अन्तर्गत बाह्य में मांसपेशियाँ के आकार सम्बन्धी परिवर्तन व आन्तरिक में शेष सारे परिवर्तन, जैसे-रक्त सम्बन्धी, हड्डियों सम्बन्धी गत्यात्मक स्वभाव आदि होते हैं। किशोरावस्था में बालकों का शारीरिक विकास अथवा प्रौढ़तापूर्ण प्राप्त न होने पर बालक का सामाजिक - मानसिक विकास भी प्रभावित होता है। इस अवस्था में जिस बालक के भीतर किसी प्रकार का आंगिक अभाव रहता है वह हीन भावना से पीड़ित रहता है। अन्तर्मुखी होने की सम्भावना रहती है। इस तरह किशोरावस्था में प्रमुख शारीरिक विकासों का अभाव किशोरों के सम्मुख मानसिक समस्याएँ उत्पन्न कर देते हैं। बालक अन्तर्मुखी के साथ-साथ हीनता की भावना से ग्रस्त होने लगते हैं और वे अपने समूह में लज्जा व संकोच के लक्षण प्रदर्शित करने लगते हैं।

जन्म लेने के कुछ माह तक बालक को किसी भी वस्तु का ज्ञान नहीं होता। उसे समझ सकने की शक्ति नहीं होती। धीरे-धीरे परिपक्वता, प्रशिक्षण और सीखने की प्रक्रिया द्वारा बालक में समझने की शक्ति आने लगती है। जन्म लेने के समय उसमें चेतना का विकास अवश्य होने लगता है किन्तु वह इतनी अविकसित होती है कि वह वातावरण को ठीक तरह समझ नहीं पाता, किसी भी अवधारणा को समझने का ज्ञान उसमें नहीं होता है। आयु वृद्धि के साथ-साथ उसका भावी विकास होता है। बालक में परिपक्वता और विवृद्धि के साथ-साथ सीखने की योग्यता भी बढ़ती जाती हैं। वह अपनी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से सुनकर, सूंघकर, स्वाद लेकर या अनुभूति के द्वारा समझने का प्रयास करता है और सम्बन्धित ज्ञान को सीख लेता है। उसके ज्ञानात्मक विकास से वातावरण भी उसे अर्थपूर्ण लगने लगता है।

इस दृष्टिकोण से ज्ञानात्मक विकास का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा ज्ञान और समझ का विकास होता है।

"Cognitive Development is the process by which knowledge and understanding is developed."

इस प्रकार ज्ञानात्मक विकास समझ की मानसिक प्रक्रिया से सम्बन्धित क्रिया है। पियानोट के विकास के सिद्धान्त के अनुसार प्रारम्भिक 24 माह में इन्द्रिय गति का विकास होता है। इसके पश्चात् संज्ञानात्मक या ज्ञानात्मक विकास प्रारम्भ होता है। इसी में चिन्तन, तर्क तथा कल्पना का विकास होता है।

1. किशोरावस्था में विकास I- शारीरिक गत्यात्मक एवं यौन विकास

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :-

1. किशोरावस्था का उद्‌भव लेटिन भाषा से माना गया है जिसका सामान्य अर्थ है बढ़ना या विकसित होना।
2. किशोरावस्था वय: सन्धि के बाद की अवस्था है।
3. किशोरावस्था में केवल शारीरिक परिपक्वता ही नहीं वरन् समस्त प्रकार की परिपक्वता पायी जाती है।
4. किशोरावस्था को दो उप अवस्थाओं में बाँटा गया है- पूर्व किशोरावस्था और उत्तर किशोरावस्था।
5. किशोरावस्था में विकास का निश्चित प्रक्रम होता है।
6. किशोरावस्था को तूफान व तनाव की आयु भी कहते हैं।
7. किशोरावस्था में शारीरिक विकास के साथ-साथ यौन विकास भी प्रारम्भ हो जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(इ) किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें एक विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से ..... की ओर बढ़ता है।

(अ) अधिगम (ब) किशोरावस्था

(स) परिपक्वता (द) विकास

(इइ) पूर्व किशोरावस्था 13-14 वर्ष से लेकर ..... की होती है।

(अ) 15-16वर्ष (ब) 16-17 वर्ष

(स) 17-18वर्ष (द) 18-19 वर्ष

(इइइ) किशोरावस्था का अपना एक निश्चित ..... पाया जाता है।

(अ) स्तर (ब) प्रक्रिया

(स) प्रतिमान (द) दर

(इ1) किशोरावस्था ..... बाहुल्य की अवस्था है।

(अ) सफलता (ब) समस्या

(स) असफलता (द) विकास

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(इ) किशोरावस्था को ..... की आयु कहा जाता है।

(इइ) किशोरावस्था में ..... के लक्षणों की पुनरावृत्ति होती है।

(इइइ) किशोरावस्था ..... के जागरण की अवस्था है।

(इ1) ..... ने किशोरावस्था को बाल्यकाल और प्रौढ़ावस्था के मध्य का परिवर्तन काल कहा है।

3. किशोरावस्था में विकास को समझाइये।
4. 'किशोरावस्था तूफान और तनाव की आयु है' स्पष्ट कीजिये।
5. किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तन समझाइये।
6. किशोरावस्था की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) ब (iii) स (iv) ब
2. (i) तूफान व तनाव (ii) शैशवावस्था
   (इइइ) कामुकता (iv) कुल्हन